छोटी कहानियां

Short Stories of Jainism

Different Stories

Story No.1

लडो मत, छोडो सब

जैन धर्म के प्रथम आद्य तीर्थंकर श्री आदिश्वर भगवानने दीक्षा ग्रहण करने के वक्त अपने १०० पुत्रों को राज्य-साम्राज्य दे दिये थे लेकिन इस पृथ्वी पर चक्रवर्ती बनने के लिए सर्जित हुए ज्येष्ठ पुत्र भरत महाराजाने अपने सभी छोटे ९९ भाइयों को अपनी आज्ञा में आने के लिए संदेश भेज दिया, परिणाम स्वरूप बाहुबली को छोडकर शेष सभी ९८ भाईयों शिकायत लेकर प्रभु आदिनाथ के चरणों में पहुंचे और प्रभु से कहा कि-अब हम क्या करे ? हम सब मिलकर भरत से युद्ध करे या फिर कुछ और ?

परमात्मा श्री आदिश्वर भगवानने जवाब देते हुए कहा : हे आर्यपुत्रो ! इस आत्माने राज्य-साम्राज्य तो अनेक भवो में प्राप्त किया होगा और मृत्यु आने पर सब कुछ छोडकर जाना भी पडा होगा परंतु यह मनुष्य भव तो आत्म साम्राज्य के धणी बनने के लिए, स्वामी बनने के लिए, मालिक बनने के लिए मिला है इस लिए लडो मत, छोडो सब... संयम स्वीकार करके साधना के मार्ग पर चलते हुए कर्मो पर विजय प्राप्त करो और सिद्धगति के स्वामी बनकर मोक्षनगरी के मालिक बनो ।

यह है, आदिनाथ भगवान के द्वारा एक श्रेष्ठ पारिवारिक संदेश ।

Don't fight, sacrifice everything

The first and prime Tirththankar of Jain religion, Shri Adeshwar Bhagwan before taking ***DIKSHA*- (renouncing materialistic pleasures and leading a life as a saint)** distributed his entire kingdom and empire between his 100 sons, but his eldest son Bharat Maharaja who was destined to become a Chakravarti on this earth, messaged all his 99 brothers to follow his commands. As a result of this, 98 of his brothers excluding Bahubali, went to Shri Adeshwar Bhagwan and complained, requesting him for his guidance as to what they should do. They asked him whether they should go to fight against Bharat? Shri Adeshwar Bhagwan said: "Oh sons of the Aryans, our souls would have in its numerous births lived as Kings and Emperors and every time would have had to giveup all that. However, this birth as a human being has been destined to conquer the soul and become its lord, hence there is no need to fight instead sacrifice everything. Accept restraint and through meditation conquer your deeds and actions in order to achieve ***Salvation*** and ***MOKSHA*– (The transcendent state attained as a result of being released from the cycle of rebirth).**

This was the best practical advice for family bonding given by Shri Adeshwar Bhagwan.

Courtesy by : एक सद्गृहस्थ गुरुभक्त परिवार